بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-15.12.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन।

तथा फ़लिस्तीन के निर्दोष पीड़ितों के लिए दुआ की पुनः प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 15 दिसम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी के संदर्भ में ओहद की लड़ाई का वर्णन हो रहा था जिसके आगे का वर्णन इस प्रकार है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओहद के मैदान में जब पड़ाव फ़रमाया तो मुसलमानों की सेना के पीछे एक ओर ओहद का पहाड़ था जिसके कारण मुस्लिम सेना पीछे से होने वाले हमले से सुरक्षित हो गई थी परन्तु एक ओर पहाड़ियों के बीच एक छोटा रास्ता था, तथा यह स्थान ऐसा था कि शत्रु इस ओर से आकर हमला कर सकता था। अतः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस शंका एवं स्थिति को अनुभव करते हुए पचास तीर चलाने वाले सैनिक सहाबी रज़ी. के एक दल पर अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ी. को अमीर बनाकर इस तंग तथा सकरे रास्ते पर नियुक्त फ़रमाया। आप स. ने इन तीर चलाने वालों को यह निर्देश दिया था कि यदि तुम देखो कि हमें पक्षी उचक रहे हैं अथवा हमने दुश्मन सेना को पराजित कर दिया तथा उसको नष्ट कर दिया है तो भी तुम कदाचित अपने स्थान से न हटना, यहाँ तक कि मैं तुम्हारी ओर संदेश भेजूँ।

पवित्र जीवनी स. का एक रचनाकार लिखता है कि आप स. ने फ़रमाया कि तुम दुश्मन के घुड़सवार दस्तों को हमसे दूर रखना ताकि वे हमारे पीछे से आकर हमला न कर सकें। निःसन्देह हम

तब तक ग़ालिब रहेंगे जब तक तुम अपने स्थान पर जमे रहोगे। फिर फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! मैं तुझे इन पर गवाह बनाता हूँ।

एक रचनाकार ने लिखा है कि आप स. की यह रणनीति ऐसी उत्तम तथा सुन्दर थी जिससे हुज़ूर अलैहिस्सलाम के सैन्य नेतृत्व की अदभुत प्रतिभा का पता चलता है तथा साबित होता है कि कोई कमांडर चाहे कितना ही बुद्धिमान क्यूँ न हो, आप स. से बढ़कर सूक्ष्म, अपूर्व, विवेक पूर्ण नीति की योजना नहीं बना सकता।

तीर चलाने वालों के दल ओहद पहाड़ पर नियुक्त करने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम संतुष्ट हो गए तथा सेना को पंक्तिबद्ध करने में व्यस्त हो गए। सैनिकों की संख्या तथा युद्ध सामग्री की दृष्टि से प्रत्यक्षतः मुसलमानों की स्थिति दुर्बल थी। मुशरिकों की सेना की दस पंक्तियाँ, जबकि इस्लाम की सेना में केवल दो पंक्तियाँ थीं तथा पचास तीर चलाने वाले उस सकरे रास्ते पर थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विनम्रता तथा विनयता पूर्ण ख़ुदा तआला के हुज़ूर गिड़गिड़ा कर दुआएँ मांग रहे थे। हज़रत अनस रज़ी. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ओहद के दिन यह फ़रमा रहे थे कि ऐ अल्लाह! यदि तो चाहे तो धरती पर तेरी उपासना नहीं की जाएगी अर्थात यदि तू ने सहायता न की तो फिर यही हाल होगा। कुछ अन्य रिवायतों में है कि बदर के युद्ध वाले दिन भी यही दुआ की थी, वल्लाहु आलमु।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. ने कहा कि आओ हम दोनों मिल कर दुआएँ मांगते हैं। हज़रत सअद रज़ी. ने दुआ मांगी कि ऐ मेरे रब! कल जब हमारी दुश्मन के साथ मुटभेड़ हो तो मेरा सामना किसी कठोर एवं शक्ति शाली यौद्धा से हो तथा मैं उसकी हत्या कर दूँ। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. ने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! कल मेरा सामना ऐसे व्यक्ति से हो जो कठोर शक्ति शाली हो तथा जो मेरे नाक कान काट डाले तथा जब मैं तुझसे मिलूँ तो मैं कहूँ कि तेरी तथा तेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन में मेरी ऐसी दशा हुई है। फिर युद्ध में दोनों के साथ उनकी दुआओं के अनुकूल ही हुआ।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में लिखते हैं कि अपने पीछे वाली दिशा में व्यापक सुरक्षा की व्यवस्था करके आप स. ने इस्लामी सेना को पंक्तिबद्ध किया तथा विभिन्न दलों के अलग अलग अमीर नियुक्त फ़रमाए। उस अवसर पर आप स. को यह सूचना दी गई कि क़ुरैश की सेना का झंडा तलहा के हाथ में है। तलहा उस वंश से सम्बंध रखता था जो क़ुरैश के पूर्वज कसयी बिन कलाब के द्वारा स्थापित किए गए प्रबन्ध के अंतर्गत युद्धों में क़ुरैश की सेना का झंडा वाहक होने का अधिकारी था। इससे अवगत होने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हम राष्ट्रीय प्रेम दिखाने के अधिक पात्र हैं। अतएव आप स. ने हज़रत अली रज़ी. से मुहाजिरों का झंडा लेकर मसअब बिन उमैर रज़ी. के हवाले कर दिया जो उसी वंश के एक व्यक्ति थे

जिससे तलहा सम्बंध रखता था। दूसरी ओर अबू सुफ़यान सेना का अमीर था तथा महिलाएँ सेना के पीछे दफ़ें बजा बजा कर तथा गीत गा गा कर पुरुषों को उत्साहित करती थीं।

युद्ध को अबू आमिर ने शुरु किया, यह औस नामक क़बीले से था तथा मदीने का रहने वाला था और उसे राहिब के नाम से पुकारा जाता था। यह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से द्वेष एवं ईर्षा के कारण भाग कर मक्का चला गया था तथा उसको यह भ्रम था कि जब मैं मैदान में जाऊँगा तो मेरे क़बीले के लोग मेरे साथ आ मिलेंगे। इस आशा से जब उसने बुलन्द आवाज़ से पुकारा कि ऐ औस की सेनाओं! मैं अबू आमिर हूँ तो अन्सार ने कहा कि ऐ फ़ासिक़! तेरी आँख ठंडी न हो, और उन पर पत्थर फेंके तो वह अपने साथियों सहित भाग निकला।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. इसका विवरण बयान करते हुए लिखते हैं कि अबू आमिर तथा उसके साथियों के भागने के दृश्य को देख कर क़ुरैश का झंडा वाहक तलहा बड़े जोश की अवस्था में आगे बढ़ा तथा अति अहंकारी रूप में लड़ाई के लिए पुकारा। हज़रत अली रज़ी. आगे बढ़े तथा दो चार हाथ में तलहा को काट कर रख दिया। इसके बाद क़ुरैश की ओर से लगभग नौ व्यक्तियों ने बारी बारी अपने राष्ट्रीय ध्वज को अपने हाथों में लिया किन्तु सारे के सारे बारी बारी मुसलमानों के हाथों मारे गए।

अतः क़ुरैश के झंडा वाहकों के मारे जाने के बाद दोनों सेनाएँ आपस में गुत्थम गुत्था हो गईं तथा भीषण युद्ध हुआ और एक अवधि तक दोनों ओर से हत्या एवं रक्तपात का सिलसिला जारी रहा। अन्ततः धीरे धीरे इस्लामी सेना के सामने क़ुरैश के पाँव उखड़ने शुरु हो गए।

विख्यात अंग्रेज़ इतिहासकार सर विलयम मयूर लिखता है कि मुसलमानों के भयानक हमले के सामने मक्के वालों की सेना के पाँव उखड़ने लग गए। मुसलमानों की ओर से ओहद के मैदान में भी वही दलेरी एवं पौरुष तथा मृत्यु व शंकाओं से वही निश्चिंतता प्रकट की जो बदर की लड़ाई के अवसर पर उन्होंन दिखाई थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने बयान किया है कि लड़ाई हुई और अल्लाह तआला की सहायता एवं समर्थन से थोड़ी ही देर में साढ़े छः सौ मुसलमानों के मुक़ाबले में तीन हज़ार मक्के के अनुभवी सैनिक सिर पर पाँव रख कर भागे। उस अवसर पर उस सकरे रास्ते पर मौजूद मुसलमानों ने समझा कि आप स. ने जो कुछ फ़रमाया था, केवल चेतावी के रूप में फ़रमाया था अन्यथा आप स. का अभिप्रायः यह नहीं हो सकता था कि दुश्मन भाग भी जाए तो यहीं खड़े रहो। इस लिए उन्होंने वह रास्ता छोड़ दिया तथा युद्ध के मैदान में कूद पड़े। इस अवज्ञा के कारण फिर बाद में जो परिणाम प्रकट हुए उनका भी आगे वर्णन होगा।

हज़रत अनस रज़ी. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ने ओहद के दिन एक तलवार पकड़ी और फ़रमाया कि इसे मुझसे कौन लेगा? हज़रत अबू दजाना रज़ी. ने पूछा कि इसका हक़ क्या है? आप स.

ने फ़रमाया कि इससे किसी मुसलमान की हत्या न करना तथा किसी काफ़िर के सामने से न भागना तथा डट कर मुक़ाबला करना। उन्होंने तलवार ली तथा मुशरिकों के सिर फाड़ दिए और उसका हक़ अदा कर दिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलवार लेने के अत्यधिक इच्छुक हज़रत ज़ुबैर रज़ी. थे परन्तु जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलवार अबू दजाना रज़ी. को दी तो उन्होंने संकल्प किया कि वे देखेंगे कि अबू दजाना रज़ी. उस तलवार के साथ क्या करता है। अतएव वे कहते हैं कि अबू दजाना रज़ी. तलवार लेकर मुशरिक सैनिकों की पंक्तियों में घुस कर मौत बिखेरते हुए सेना के दूसरे छोर तक पहुंच गए जहाँ क़ुरैश की महिलाएँ खड़ी थीं। हिन्द पतनी अबू सुफ़यान उनके सामने आई तथा बड़े ज़ोर से चींख़ मारकर अपने पुरुषों को सहायता के लिए बुलाया परन्तु कोई उसकी सहायता के लिए न आया। अबू दजाना रज़ी. ने अपनो तलवार नीचे कर ली तथा वहाँ से हट आए और बाद में ज़ुबैर रज़ी. के पूछने पर बताया कि मेरा दिल इस बात पर तय्यार नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलवार एक महिला पर चलाऊँ तथा महिला भी वह जिसके साथ कोई पुरुष नहीं जो उसकी रक्षा कर सके।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. लिखते हैं कि आप स. सदैव महिलाओं का सम्मान करने की शिक्षा देते थे जिसके कारण काफ़िरों की महिलाएँ अत्यंत दलेरी के साथ मुसलमानों को हानि पहुंचाने का प्रयत्न करती थीं किन्तु फिर भी मुसलमान इन बातों को सहन करते चले जाते थे। अतएव ये हैं इस्लामी युद्धों के नियम, इन्शाअल्लाह शेष आगे बयान होगा।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- दुआएँ करते रहें फ़लिस्तीनियों के लिए भी, अत्याचार प्रति दिन अपनी चरम सीमा तक होता जा रहा है बल्कि बढ़ता ही जा रहा है। अल्लाह तआला अब अत्याचारियों की पकड़ के सामान करे तथा पीड़ित फ़लिस्तीनियों के लिए भी सुविधा पैदा फ़रमाए। मुस्लिम देशों को भी बुद्धि दे कि उनकी आवाज़ एक हो, और वे मुस्लिम भाईयों के लिए उनके हक़ अदा करने की कोशिश करने वाले हों।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131